हमारी बात

नई सबला का दूसरा अंक आप तक पहुंचाने में खुशी हो रही है। जागोरी के लिये "सबला" प्रकाशन का काम नया है सो नये सिरे से सब सीखना पड़ रहा है। अभी क़दम सधे नहीं हैं, डगमगाते हैं। जब ज़्यादा परेशानी होती है तो शारदा जी के पास भागे जाते हैं। हमारी खुशक़िस्मती है कि शारदा जी हमेशा मदद करने को तैयार रहती हैं।

बीच में जब कुछ महीनों के लिये सबला निकलनी बन्द हो गई थी तब आप में से कई ने पूछा "क्या हुआ?" "क्यों हुआ?" कुछ ने कहा "सबला की कमी खलती है।" अब जब सबला दोबारा से मिलने लगी है तो लिखिये न ख़त, यह बताने को कि सबला कैसी लग रही है। सबला है या अभी ढीली है? क्या कमी नज़र आ रही है?

हमें आपके सुझावों और हौसला अफ़ज़ाई की बहुत ज़रूरत है। पत्रिका निकालने में मज़ा तभी है जब संवाद हो, पाठकों की तरफ़ से भी कुछ आये। निंदा आये, तारीफ़ आये, सुझाव आयें, पर कुछ आये। इकतरफ़ा बात से बात ही नहीं बनती। तो आपको न्योता है हमसे बतिआने का।

हमारा यह अंक दीवाली पर निकल रहा है सो जागोरी और संपादक मंडल की तरफ़ से आपको हार्दिक शुभकामनायें। आपके पारिवारिक जीवन में और हम सब के सामाजिक जीवन में प्रेम, सद्भावना, न्याय के दीप जलें। हम सब आशा का हाथ थामे रहें, और यह कहते हुए

इक न इक शम्मा इस अन्धेरे में जलाये रखिये
सुबह होने को है माहौल बनाये रखिये

कमला भसीन